D-I P-I

डा. सुजाता गुप्ता

'पद्मावत' पर संक्षिप्त टिप्पणी

जायसी सूफी काव्य और भक्तिकाल के साथ-साथ हिंदी साहित्य के प्रतिष्ठित एवं प्रसिद्ध कवि हैं। उनकी प्रसिद्धि का मुख्य आधार, उनके द्वारा रचित महाकाव्य पद्मावत है।

'पद्मावत' एक प्रेमाख्यान है। जिसमें समस्त काव्य विशेषताएँ उपलब्ध हैं। इस प्रबंध काव्य का पूर्वार्द्ध कल्पना-मिश्रित है तथा उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक प्रमाणों के साथ संलग्न है। 'पद्मावत' में सिंहलदेश की राजकुमारी पद्मावती और चितौड़ के राणा रत्नसेन का प्रेम वर्णित है। पद्मावती के हीरामन शुक से उसके रूप-सौंदर्य का वर्णन सुनकर राजा रत्नसेन कठिन परिश्रम एवं साधना के पश्चात् उसे प्राप्त करता है। पद्मावती के रूप की प्रशंसा सुनकर अलाउद्दीन खिलजी चितौड़ पर आक्रमण करता है तथा आठ साल युद्ध के बाद, धोखे से रत्नसेन को बंदी बनाया जाता है। इसे बाद में गोरा बादल छुड़ा लाते हैं। देवपाल से युद्ध में राजा रत्नसेन मृत्यु को प्राप्त होता है और पद्मावती तथा राजा रत्नसेन की पहली पत्नी नागमती सती हो जाती है।

रानी नागमती का विरह-वर्णन तो अत्यंत ही मार्मिक है। जायसी के काव्य में रहस्यवाद है, जो उनके विचारों के प्रतिपादन का साधन है। सूफी काव्य परंपरा में 'पद्मावत' सबसे प्रौढ़ एवं सरस रचना है। पद्मावती का सौंदर्य पाठकों को अत्यंत ही मोहक एवं लोकोत्तर परिसर में ले जाता है। 'पद्मावत' का केन्द्रीय रस 'शृंगार रस' ही है, किंतु इस शृंगारिकता में मानसिक पक्ष अधिक प्रधान्य है, शारीरिक पक्ष गौण है।

'पद्मावत' में वर्णित विरह वर्णन हिंदी साहित्य का उत्तम उदाहरण है। नागमती का विरह अद्वितीय बन पड़ा है। नागमती, राजा के लिए अपने मार्मिक संदेश को भेजती है, जिसमें वह पशु-पक्षियों तक से करुण पुकार करती है —

"पिउ सौं कहेउ संदेसड़ा, हे भौंरा, हे काग।"
नागमती विरह वर्णन में 'बारहमासा' खंड का अत्यंत निर्मल एवं कोमल स्वरूप मिलता है।

इस महाकाव्य में लोकसंस्कृति का जीवंत रूप दिखलाई देता है। लोकप्रचलित अवधी भाषा में इसकी रचना की गयी है। अलंकार विधान और छंद विधान — दोनों को ही रखा गया है। अलंकार विधान में अन्योक्ति, समासोक्ति के अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास, अतिश्योक्ति आदि अलंकारों के नूतन एवं मौलिक प्रयोग मिलते हैं। छंद विधान में सर्वत्र दोहा-चौपाई का ही प्रयोग दिखलाई देता है। जायसी ने मसनवी शैली का प्रयोग करते हुए इस महाकाव्य की रचना की थी।